12.51 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

INCREASES IN EXCISE DUTY ON SIZED SUPERFINE AND FINE YARN

The Deputy Prime Minister and Minister of Finance (Shri Morarji Desai): I beg to lay on the Table a statement regarding the increase in excise duty on sized superfine and fine yarn and the estimated additional revenue therefrom. [*Placed in Library, see No. LT*-1442/67.]

DELAY IN EXECUTION OF RUSSIAN AIDED PROJECTS

Shri Morarji Desai: I beg to lay on the Table a Statement regarding delay in the execution of Russian aided Projects. [*Placed in Library. See* No. LT-1459/67.]

डा० राम मनोहर लोहिया (कन्नौज): अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। श्री देसाई ने जो वक्तव्य सदन-पटल पर रखा है, मैंने उस विषय के सम्बन्ध में आपको दो तीन पत्र लिखे, जिनमें श्री देसाई की ग़लती बताई। मैं ने श्री देसाई के मंत्रालय के लोगों से बातचीत भी की। अब सदन में जो तरीका अपनाया जा रहा है, उसका नतीजा यह होगा कि मेरी बात को सदन के सामने बाद में अकेले आयेगी, जब कि श्री देसाई का वक्तव्य सदन-पटल पर रख दिया गया है— जैसा कल हुआ है, वैसा ही आज भी हो जायेगा और किसी को कुछ पता नही चलेगा। इसलिए श्री देसाई को चाहिए कि वह कम से कम अपने बयान का सारांश इस सदन को दे दें। तब तो मेरे जवाब का कुछ मतलब होगा। वैसे मैं आपसे कहूं कि कायदे के अनुसार आपको मेरी बात या तो पहले और या बाद में पूरी तरह से सुननी चाहिए। अध्यक्ष के निदेश 115 के अनुसार पहले सुननी चाहिए, लेकिन अगर किसी तरह से आप ने उस नियम को तोड़ दिया है, तो मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि श्री देसाई अपने बयान का सारांश बता दें और उसके बाद मैं अपनी बात कहूं, वर्ना रंगा साहब या दूसरे माननीय सदस्य इस मामले को बिल्कुल साफ समझ ही नहीं पायेंगे।

अध्यक्ष महोदय: क्या आप इसी वक्त इस स्टटमैंट को डिसकस करना चाहते हैं?

डा० राम मनोहर लोहिया: डिसकस करने का सवाल नहीं है। वित्त मंत्री अपने बयान का सारांश बता दें और उसके बाद मैं अपनी बात कह दूं।

अध्यक्ष महोदय: सारांश बताने का नतीजा यह होगा कि कई दूसरे मेम्बर सवाल पूछने लग जायेंगे और यह मामला चलता रहेगा।

डा० राम मनोहर लोहिया: आप मुझे अपनी बात कहने का अवसर देंगे न?

अध्यक्ष महोदय: किस बारे में?

डा० राम मनोहर लोहिया: फ़ाइन और सुपरफ़ाइन यार्न पर एक्साइज़ ड्यटी के बारे में, जिस पर श्री देसाई ने अपना वक्तव्य सदन-पटल पर रखा है। आप जानते हैं कि यह वक्तव्य कई पत्रों के बाद आया है।

अध्यक्ष महोदय: उन्होंने आपको लिखा है।

डा० राम मनोहर लोहिया: आप मुझे बोलने का अवसर देंगे न?

Mr. Speaker: You are corresponding with him. Why don't you continue that? Why do you want to raise it here?

डा० राम मनोहर लोहिया: इस लिए कि ग़लत बयानी फिर भी रह जाती है। यह वित्तीय मामला है। यह खाली एक टैक्स का मामला नहीं है। मैंने यह ग़लती बताई था कि सरकार ने इस ड्यूटी की जो आमदनी दी है, वह उससे चार पांच सौ सैंकड़ा